

विचार विन्धु

ऐश्वर्य उपाधि में नहीं बल्कि इस चेतना में है कि हम उसके योग्य हैं। –अरस्तु

सरकारी कार्यालय – जनता की दृष्टि में

समय–समय पर इसी संपादकीय स्तंभ में सीधे जनता से संपर्क वाले विभागों की कार्यशैली और व्यवहार के बारे में लिखता रहा हूं। जनता का कार्य समय पर और चक्कर लगाए बिना करते रहने की आवश्यकता पर बल देता रहा हूं। ऐसा करने हेतु विभिन्न प्रकार के सुझाव भी समय–समय पर इसी स्तंभ के माध्यम से दिए गए हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह आलेख, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडिया के राजस्थान चैप्टर के माध्यम से किए गए सर्वे के परिणामों से पाठकों और सरकार को अवगत करने के उद्देश्य से लिखा गया है। यह इस धारणा को जांचने का भी एक प्रयास था कि विभागों में पारदर्शिता को कमी कैसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है।

हाल ही में ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडिया के राजस्थान चैप्टर द्वारा, जयपुर स्थित जनता से सीधे संपर्क वाले कार्यालयों में विभिन्न कामों से आने वाले सामान्य लोगों का अनुभव क्या रहा है, यह पता करने हेतु एक सर्वेक्षण किया गया। यह उल्लेखनीय है कि ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, बर्लिन स्थित एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है जो प्रतिवर्ष विभिन्न राष्ट्रों में भ्रष्टाचार के स्तर का सर्वेक्षण करा के रैंकिंग जारी करती है। कुछ वर्षों से भारत का स्थान लगभग 1०० के आसपास रहा है।

इस सर्वेक्षण के लिए राजस्थान चैप्टर द्वारा जिन प्रमुख सरकारी कार्यालयों का सर्वेक्षण हेतु चयन किया गया वे हैं – नगर निगम लाल कोठी, जयपुर विकास प्राधिकरण, आरटीओ ऑफिस झालाना, कलेक्ट्रेट रजिस्ट्रेशन ऑफिस और कलेक्ट्रेट कार्यालय।

हब सवें उन व्यक्तियों से किया गया जो इन कार्यालयों से बाहर निकल रहे थे। यह सर्वे जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के विद्यार्थियों के माध्यम से किया गया। इसके लिए एक प्रश्नावली तैयार की गई। कार्यालयों से बाहर निकलने वाले नागरिकों से बात करने के लिए एवं कार्यालय में उनके अनुभव को ज्ञात करने हेतु पांच–पांच व्यक्तियों के पांच दल बनाए गए। जिन व्यक्तियों का सर्वेक्षण के लिए चयन किया गया वे प्रबंधन के विद्यार्थी थे। इन्हें अच्छी तरह इस बारे में पहले ब्रीफ किया गया था। उनसे यह अपेक्षा की गई थी कि वे उन्हीं से बात करें जो इस बारे में बात करना चाहें। उन्हें आश्वस्त किया जाए कि उनके द्वारा दी गई जानकारी का कोई नुकसान उन्हें नहीं होगा, न ही उनकी पहचान को सार्वजनिक किया जाएगा। इन विद्यार्थियों को एक प्रश्नावली दी गई, जिसमें मुख्य रूप से पूछे जाने वाले निम्न प्रश्न थे:–

आप इस कार्यालय में किस कार्य से आए थे?

आपको अपने कार्य हेतु कितनी बार आना पड़ा?

क्या आपका कार्य पूरा हो गया है?

क्या आपसे किसी ने रिश्तत की मांग की?

क्या आपको अपने काम के लिए किसी एजेंट के पास भेजा गया?

आपके साथ कार्यालयों में किस प्रकार का व्यवहार था? क्या आप इस कार्यालय में प्राप्त अनुभव से पूर्णतया संतुष्ट है, संतुष्ट है, असंतुष्ट है अथवा नितान्त असंतुष्ट है?

यह सर्वेक्षण एक दिन में 5–6 घंटे में किया गया।

इसमें कुल 25 विद्यार्थी सम्मिलित थे जिन में लगभग आधी छात्राएं थीं। इन लोगों के द्वारा किए गए सर्वेक्षण के आधार पर जो जानकारी प्राप्त हुई इसका संक्षिप्त विवरण कार्यालय वार निम्न प्रकार है :–

1 .नगर निगम कार्यालय, लाल कोठी, जयपुर

कुल 57 व्यक्तियों से चर्चा की गई। 65% व्यक्तियों ने यह बताया कि वे नगर निगम के कार्य से असंतुष्ट अथवा अति असंतुष्ट थे। 33% ने कहा कि वे सन्तुष्ट थे है और 2% ने कहा कि वे बहुत संतुष्ट थे। इस कार्यालय में आने वाले व्यक्तियों में से अधिकांश का कार्य कोई प्रमाण पत्र जैसे जन्म, मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाना, आधार कार्ड से संबंधित अथवा भूमि की समस्या के बारे में था। 42% व्यक्तियों ने बताया कि उन्हें नगर निगम के 5 से लेकर 3० बार तक चक्कर लगाने पड़े। जिन व्यक्तियों से बात की गई, उनमें से 8०% का काम एक बार तक नगर निगम में लंबित था।

इस कार्यालय में आने वाले 8०% व्यक्तियों ने कहा कि उनसे कोई रिश्तत नहीं मांगी गई, 2०र से 15००0 तक की रिश्तत ली गई।

2. जयपुर विकास प्राधिकरण

यहां अधिकांश व्यक्ति रजिस्ट्रेशन के लिए, भूमि संबंधी विवाद के लिए तथा शिकायत लेकर आए थे। इनमें से 65% ऐसे थे जो अपने अनुभव से असंतुष्ट अथवा बहुत ही अधिक असंतुष्ट थे। केवल 35% ऐसे थे जो अनुभव से संतुष्ट थे। लगभग 28% व्यक्तियों का काम न्यूनतम 6 माह से अधिक समय से लंबित था। जेडीए में अपने काम के लिए 32% लोगों को पांच बार, 7% लोगों को 1० बार और 9% लोगों को 3० बार तक आना पड़ा था। जेडीए में 21%लोगों ने कहा कि उनसे रिश्तत की मांग की गई, जबकि 79%लोगों ने कहा कि उनसे रिश्तत की मांग नहीं की गई।

3. आर टीओ झालाना

यह सर्वे हालांकि एक ही दिन में किया

गया और कुल 347 व्यक्तियों से ही

किया गया, किंतु इससे यह संकेत तो

मिलता है कि जनता को इन पांच

कार्यालयों से काम कराने में कितनी

कठिनाई होती है। परिवहन कार्यालय में

शायद अधिकांश लोग एजेंट के माध्यम से

काम कराते हैं अतः वहां पर संतुष्टि का

स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। प्रश्न

फिर भी यही है कि क्यों एजेंट के पास

जाने की आवश्यकता होती है ?

4. कलेक्ट्रेट कार्यालय (रजिस्ट्रेशन)

यहां कुल 78 व्यक्तियों से बात की गई। इनमें से 58% व्यक्ति असंतुष्ट थे जबकि 12% अति असंतुष्ट थे। इसके विपरीत 3०% ऐसे थे जो या तो संतुष्ट अथवा बहुत ही संतुष्ट थे। जिन्से बात की गई उनमें से 38%का काम हो चुका था एवं 62% का काम लंबित था। जिनका काम लंबित था उनमें से 9०% का काम 1 महीने से कम समय से एवं शेष का 6 महीने से या उसके अधिक समय से पेंडिंग था। 43% व्यक्तियों का काम एक बार में एवं 5०% व्यक्तियों का काम 5 से कम बार में पूरा हो चुका था। 9०% से कोई रिश्तत नहीं मांगी गई जबकि 1०% से 15०00 रुपए तक की रिश्तत की मांग की गई।

5. कलेक्ट्रेट कार्यालय

यहां से निकलने वाले कुल 84 व्यक्तियों से बात की गई। यहां आने वालों में 81% छात्रवृत्ति के लिए आए थे जबकि शेष भूमि विवाद अथवा वृद्धावस्था पेंशन हेतु आए थे। केवल तीन प्रतिशत ने कहा कि उनसे रिश्तत की मांग की गई, शेष से किसी प्रकार की रिश्तत की मांग नहीं की गई थी। यहां आने वाले लोगों में से 44% का काम एक बार में और 5०% का पांच बार से कम समय में हो गया था। इसके बावजूद केवल 3०% लोग इस कार्यालय के अनुभव से संतुष्ट थे, जबकि 7०% संतुष्ट नहीं थे। इनमें भी 12% तो बहुत ही असंतुष्ट थे। यहां आने वालों में 46% का काम हो चुका था और 54 प्रतिशत का लंबित था।

निष्कर्ष : –

उपरोक्त सभी कार्यालयों से कुल मिलाकर 5०% से अधिक लोग असंतुष्ट थे। असंतुष्टि का स्तर कलेक्ट्रेट के पंजीयन कार्यालय और नगर निगम के कार्यालय में अधिक था।

सर्वेक्षित लोगों में से 65% ने कहा कि उनका काम उस दिन, 6 महीने से लंबित था।

जहां रिश्तत की मांग केवल 15% प्रकरण में की गई, वहीं 17% प्रकरणों में किसी-किसी बिचौलिए के पास भेजा गया।

सभी कार्यालयों में काम के लिए बार–बार चक्कर लगाने की आवश्यकता लगभग सभी को पडी। यह सर्वे हालांकि एक ही दिन में किया गया और कुल 347 व्यक्तियों से ही किया गया, किंतु इससे यह संकेत तो मिलता है कि जनता को इन पांच कार्यालयों से काम कराने में कितनी कठिनाई होती है। परिवहन कार्यालय में शायद अधिकांश लोग एजेंट के माध्यम से काम कराते हैं अतः वहां पर संतुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। प्रश्न फिर भी यही है कि क्यों एजेंट के पास जाने की आवश्यकता होती है?

हो सकता है, कुछ विभाग, सर्वेक्षण के परिणामों को स्वीकार न करें, किंतु यह प्रबंधन के विद्यार्थियों के द्वारा बिना किसी लाग लपेट के किया गया है जिसे न मानने का कोई कारण नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि जिन कारणों से काम बहुत विलंब से होता है उनके मूल में जाया जाए। इससे यह पता लगे कि प्रक्रियाओं को सरलीकृत करने और स्पष्ट बनाने तथा प्रार्थना पत्रों का समयबद्ध निष्पादन करने की आवश्यकता है। जो भी लोग इसे अटकाने का काम करें अथवा एजेंट के पास भेजने का काम करें, उनकी जवाबदेही तय की जाकर उन्हें समुचित दंड दिया जाए। तब संभव है, लोगों के काम अधिक आसानी से हो पाएंगे। सरकार की छवि सामान्यतया उन्हीं विभागों के द्वारा बनाई या बिगाड़ी जाती है, जहां सामान्य जनता का संपर्क अधिक होता है। संवेदनशीलता का अभाव सामान्यत: सभी सरकारी कार्यालयों में देखा गया है।

आशा की जाती है कि ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, राजस्थान चैप्टर द्वारा किए गए सर्वे के परिणाम और निष्कर्ष पर सरकार विचार करेगी और इन कार्यालयों में सुधार हेतु आवश्यक कदम उठाएंगी। यह लिखना आवश्यक है कि सर्वे के आधार पर जो निष्कर्ष निकला है वह प्रचलित जन धारणा की तुलना में बेहतर है। उन कार्यालय का भी अध्ययन किया जाना चाहिए जहां संतुष्टि का स्तर बेहतर है। एक सामान्य निष्कर्ष तो यही निकलता है कि जहां पर भी पारदर्शिता का अभाव होता है वहां जवाबदेही तय करना कठिन होता है और वही भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होता है। सभी कार्यालयों की कार्य निष्पादन की प्रक्रिया को न केवल सरल एवं स्पष्ट किया जाए अपितु उसे सार्वजनिक भी किया जाकर सर्व सुलभ करवाया जाए। तब ही बिचौलियों का दखल इनमें कम हो पाएगा और सीधे नागरिक इन कार्यालय से अपने काम करवा पाने में सफल हो पाएंगे।

हालांकि यह सर्वे बहुत छोटे स्तर पर था और बहुत ही कम कार्यालयों का किया गया, इस प्रकार के सर्व सामान्य जनता के हित में, बड़े स्तर पर और अनेक कार्यालयों में समय-समय पर किए जाने की आवश्यकता है ताकि तुलनात्मक रूप से होने वाले सुधार का भी समय समय पर अध्ययन किया जा कर आवश्यक कदम सरकार द्वारा उठाए जा सकें।

–**अतिथि सम्पादक,**

राजेंद्र भाणावत, पूर्व आई ए एस,

उपाध्यक्ष, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडिया, राजस्थान चैप्टर



डॉ. जे.के. गर्ग

अनेको मान्यताओं के अनुसार काशी के एक जुल्लाह नीरू अपनी बीबी नीमा का गोना करकार लहरतारा तालाब से होते हुए घर आ रहे थे तो उसकी बीबी नीमा को प्यास लगने लगी तब दोनों तालाब पर पानी पीने तब उन्होंने एक टोकरी में फूल–पते की शय्या पर एक नवजात शिशु को देखा। नीरू–नीमा उस शिशु को उठाकर अपने घर ले आये और उसका लालन–पालन करने लग गये। वही बालक कबीर के नाम से प्रख्यात हुआ। इस प्रकार कबीर साहेब का जन्म–स्थान काशी है। कुछ लोगों का विचार है कि नीरू–नीमा को अपने गौना के समय नहीं, किन्तु उसके कई वर्षों के बाद लहरतारा पर बालक को देखा था। सवाल उत्पन्न होता है कि शिशु लहरतारा तालाब पर कहाँ से आया? इस बारे में मान्यता है कि एक विधवा या कुमारी ब्राह्मणी की कोख से यह शिशु पैदा हुआ था वो समाज से अपमानित होने के भय से नवजात बालक को लहरतारा तालाब पर छोड़ गयी थी। इस तरह से कबीर जन्म से हिन्दू थे किन्तु उनका लालन–पालन मुस्लिम परिवार के अंदर हुआ था।

बालक कबीर की शादी बचपन में ही कर दी थी। कबीर दास जी की पत्नी का नाम लोई था कबीर दास जी के एक पुत्र और एक पुत्री भी थी पुत्र का नाम कमाल था और पुत्री का नाम कमाली था यह उनकी रचनाओं द्वारा प्रमाणित होता है। मान्यताओं के अनुसार सद्गुरु

कबीर का जन्म विक्रमी संवत 1456 की जेष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को काशी में हुआ था। कबीर पंच तत्वों में विलीन माघ शुक्ल एकादशी संवत् 1575 को मगहर में हुए थे। कबीर साहेब ने 12० वर्ष तक सांप्रदायिक सहभाव का संदेश दिया था। समस्त देश के अंदर 11 जून 2०25 को संत कव्वर का जन्मोत्सव हर्ष उल्लास के साथ मनाया जायगा।

कबीर दास जी काशी के गंगा घाट के किनारे रहा करते थे ऐसा कहा जाता है कि कबीर दास जी गंगा घाट के किनारे बैठे हुए थे तभी वहां पर भग्वति काल के पुरमुख गुरु रामानंद जी स्नान कर रहे थे रामानंद की नजर कबीर दास पर पड़ी जिसके कारण कबीर के मुंह से राम शब्द निकल पड़ा। इसी राम शब्द को सुनकर गुरु रामानंद अत्यधिक प्रसन्न हुए तभी से रामानंद ने कबीर दास जी को अपना शिष्य बना लिया। उन्हें शिक्षा दी इस प्रकार कबीर दास जी के गुरु श्री रामानंद जी थे गुरु रामानंद जी ने कबीर दास को ज्ञान और भक्ति के दर्शन कराए तथा उनके ज्ञान को विकसित करने में गुरु रामानंद जी ने भूमिका निभाई। कबीर दास जीसंत की साथ साथ दार्शनिककवि और समाज सुधारक भी थे। कबीर दास जी के मुख्य रचनाएंक रचनाएं (१) कबीर की साखियां (2) सबर (3) रमणी हैं। कबीर दास जी की सर्वोत्तम रचनाओं में उन पुस्तक सबद भी है है इस रचना में कबीर दास जी ने प्रेम और अंतरंग साधना का वर्णन खूबसूरती से किया गया है। संत कबीर की साखियां में ज्यादातर कबीर दास जी की शिक्षाओं का उल्लेख मिलता है और उसके सिद्धांतों का वर्णन इस रचना में बखूबी से किया गया है। कबीर दास जी ने अपना सारा जीवन काशी में रहकर ही लोगों के कल्याण के लिए और सामाजिक बुराइयों और कुरस्त्रियों का अंत करने के लिए लगा दिया मृत्यु के समय कबीर दास जी मगहर चले गए जो कि उत्तर प्रदेश में पड़ता है ऐसा कहा जाता है कि उस समय मगहर में रहने वाले

इसीलिए उन्होंने बतलाया कि मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा। तेरा तुझको सौंपता, क्या लागे है मेरा।

कबीर जी ने उपदेश दिया की यह माया बड़ी पापिन है। यह प्राणियों को परमात्मा से विमुख कर देती है तथा उनके मुख पर दुर्बुद्धि की कुंडी लगा देती है और राम–नाम का जप नहीं करने देती। अत: संत कहते है की कबीरामया पापणी, हरि सँ करे हराम। मुई कड़ियाली कुमति करे, कहेण न देई राम।। यह माया बड़ी पापिन है। यह प्राणियों को परमात्मा से विमुख कर देती है तथा उनके मुख पर दुर्बुद्धि की कुंडी लगा देती है और राम–नाम का जप नहीं करने देती।

सारे संसारिक लोग पुस्तक पढ़ते–पढ़ते मर गए कोई भी पंडित (वास्तविक ज्ञान रखने वाला) नहीं हो सका। परंतु

कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्रांति : विकसित भारत का रोडमैप



डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत

भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा एक महत्वकांक्षी दस्तावेज “इंडिया एआई क्रांति: विकसित भारत के लिए रोडमैप” जारी किया गया है जो भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में वैश्विक नेता बनाने की दिशा में एक रणनीतिक खाका प्रस्तुत करता है। यह मिशन न केवल तकनीकी नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, बल्कि रोजगार सृजन के क्षेत्र में भी व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करता है। इस रिपोर्ट के रोजगार सृजन से संबंधित डेटा और इसके प्रभावों का विश्लेषण है साथ ही यह विश्लेषण भी है कि अगले दशक में यह भारत के आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य को कैसे प्रभावित कर सकता है।

इंडिया एआई मिशन 2024 में 1०,372 करोड़ के बजट के साथ स्वीकृत मिशन है जो अगले पांच वर्षों में भारत के एआई पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने का लक्ष्य रखता है।

राशिफल मंगलवार 10 जून, 2025



पंडित अनिल शर्मा

बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग सायं 6:०2 तक है। राजयोग दिन 11:36 से सायं 6:02 तक है। भद्रा दिन 11:36 से रात्रि 12:25 तक है। आज बुध उदय पश्चिम में दिन 12:19 पर होगा। आज चांद पूर्णिमा व्रत, चम्पक चतुरदशी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:०1 से 1०:43 तक, लाभ अमृत 1०:43 से 2:०8 तक, शुभ 3:51 से 5:33 तक।
राहुकाल: 3:०0 से 4:30 तक।
सूर्योदय 5:31, **सूर्यास्त** 7:16

है। ईवाई इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार 2०3० तक जेनेरेटिव एआई भारत में 38 मिलियन नौकरियों को प्रभावित कर सकती है, जिससे अर्थव्यवस्था में 2.61 फीसदी की उत्पादकता वृद्धि होगी। असंगठित क्षेत्र में जेन ए आई को अपनाने से अतिरिक्त 2.82 फीसदी उत्पादकता वृद्धि हो सकती है। इंडियन एक्सप्रेस का अनुमान है कि 2०25 तक एआई के क्षेत्र में लगभग 2० मिलियन नौकरियाँ सृजित हो सकती हैं, जो चिकित्सा, कृषि, मौसम पूर्वानुमान, शहरी नियोजन, और अंतरिक्ष अनुसंधान जैसे विविध क्षेत्रों में होंगी।

एआई और मशीन लर्निंग विशिष्ट, डेटा वैज्ञानिक, सूचना और सुरक्षा विश्लेषक, और बिग डेटा विशिष्ट जैसे नए रोजगार क्षेत्र उभर रहे हैं। विश्व आर्थिक मंच की फ्यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट 2025 के अनुसार, भारत में एआई और संबंधित प्रौद्योगिकियों के बढ़ते उपयोग से तकनीकी क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। लगभग 67 फीसदी भारतीय कंपनियाँ विविध प्रतिभा पूल से कर्मचारियों की भर्ती करने की योजना बना रही हैं, जो वैश्विक औसत से अधिक है।

इंडिया एआई मिशन के तहत ‘फ्यूचर स्किल्स प्राइम’ और ‘यूएएआई: यूथ फॉर उन्नित एंड विकास विद एआई’ जैसे कार्यक्रम

शुरू किए गए हैं, जो युवाओं को एआई–संबंधित कौशल प्रदान करने पर केंद्रित हैं।

वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम की रिपोर्ट के अनुसार, 2०3० तक भारत के 63 फीसदी श्रमिकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी, लेकिन 12 फीसदी को अपरकलिंग में कठिनाई हो सकती है, जो लगभग 7० मिलियन श्रमिकों को प्रभावित कर सकती है।

मिशन समावेशी रोजगार सृजन पर जोर देता है। भारत में महिलाओं की कार्यबल भागीदारी दर लगभग 33 फीसदी है जो वैश्विक औसत 5० फीसदी से थोड़ा कम है। इंडिया एआई मिशन और संबंधित पहल ग्रामीण और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को लक्षित करके विविध कार्यबल निर्माण पर ध्यान दे रही हैं। भाषाई विविधता को संबोधित करने के लिए, भाषिनी जैसे प्रोजेक्ट्स के माध्यम से 5०० मिलियन डिजिटल रूप से असंबद्ध भारतीयों को वॉयस–आधारित इंटरफेस के माध्यम से सेवाएँ प्रदान करने की योजना है। रोजगार सृजन की संभावनाओं के बावजूद, कुछ चुनौतियाँ हैं जो इस प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं।

डब्ल्यूईएफ की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में तकनीकी प्रतिभा की कमी नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने में बाधा डाल रही है। इकोनॉमिक सर्वे 2०24–25 में चेतावनी दी गई है कि एआई के कारण निम्न–कौशल वाली नौकरियाँ, जैसे प्रशासनिक और डेटा

उनकी सत्यनिष्ठा एवं निष्पक्षता ने उनके व्यक्तित्व को ऐसा महनीय मोहक और चुम्बकीय बना दिया था कि जो उनके पास गया, उनका ही होकर रह गया।

कबीरदेव ऐसे महत्तम संत हैं जो केवल भारतीय परंपरा ही नहीं, अपितु विश्व मानवता के भ्रत उसको पकड़ते हैं और सबको वहीं ले जाना चाहते हैं, जहाँ पहुँचकर वर्ण, वर्ग एवं मत–पंथगत सारे भेदभाव निस्सार हो जाते हैं और जहाँ से प्रेम की निर्मल, स्निग्ध और शीतल धारा प्रवाहित होकर सबको सराबोर कर देती है। पूरी मानवता को आत्मसात करने वाली प्रेम की निर्मल धारा में कबीरदेव ऐसे चौगहे पर खड़े हैं, जहाँ सारे रास्ते आकर मिलते हैं। यह कहना अतिथ्योक्तकति नहीं होगी कि कबीर में पूरी मानवता का सार समाया हुआ है। कबीर पहले भारतवासी हैं, जिन्होंने सारी मानव जाति के लिए एक सामान्य धर्म का निर्भीकता के साथ उपदेश दिया। कबीर साहेब की वाणियों में आये हुए आध्यात्मिक रूपकों के रहस्य को न समझकर तथा उनका मूल रहस्य खोल कर महान काम किया है। विद्वानों ने उनको गृहस्थ सिद्ध करने की चेष्टा की है जो सवथा अनर्थ है।

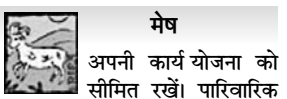
कुछ विद्वान कबीर साहेब को आजीवन गृहस्थ बताते हैं और कुछ बताते हैं कि वे पहले गृहस्थ थे किन्तु पीछे से विरक्त हो गये थे। यह सर्वविदित है कि कबीर साहेब देश विदेशे ही फिरा होते हुए भी जीवात्मा कह रही है कि ‘तू है’ ‘तू है’ कहते–कहते मेरा अहंकार समाप्त हो गया। इस तरह भगवान पर न्यूछावर होते–होते मैं पूर्णतया समर्पित हो गई। अब तो जिघर देखती हूँ उधर तू ही दिखाई देता है।

तूँ कूँ करता तूँ भया, मुझ में रही संत कबीर के चरणों में कोटि कोटि नमन्।

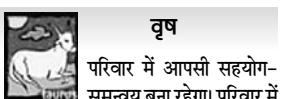
—डॉ. जे.के. गर्ग,

पूर्ण संयुक्त निदेशक नालं

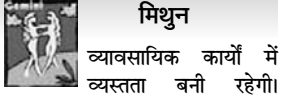
शिक्षा



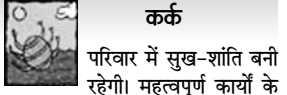
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागवद्ध रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। नवीन कार्यों में व्यवधान हो सकता है।



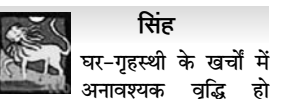
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वहन होगा।



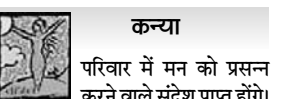
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। विवाहित मामलों से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।



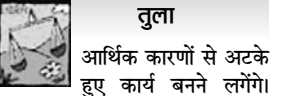
परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।



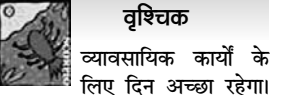
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है।



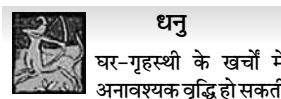
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सफलता से आत्मविश्वास बढ़ेगा।



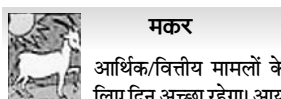
आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।



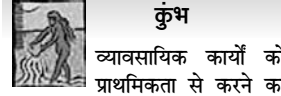
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित खोत से घन प्राप्त होगा।



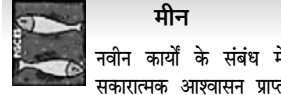
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अतिथियों का आगमन रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा।



आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।



व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय वृद्धि होगी।



नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। नौकरोपेक्षा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण बिम्बेदारी मिल सकती है।